International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

आधुनिक समाज में वाक्–तत्त्व की भूमिका

सुलभा
शोधार्थी, संस्कृत–विभाग बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक (हरियाणा) 124021
डॉ. पटेल सिंह
शोध–निर्देशक, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक (हरियाणा) 124021

शोध सार :
उपनिषदों में वाक्–तत्त्व को एक दैवी शक्ति, ब्रह्म की अभिव्यक्ति और आत्मा की सक्रियता का प्रतीक माना गया है। वाक् केवल ध्वनि या शब्द नहीं है, बल्कि वह चेतना है जो विचारों, अनुभूतियों और ज्ञान को एक व्यक्ति से दूसरे तक संप्रेषित करती है। आधुनिक समाज में जहाँ संवाद की गति और प्रभाव अभूतपूर्व रूप से बढ़ गया है, वहाँ वाक्–तत्त्व की उपनिषदिक समझ अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। आज का समाज एक "सूचना समाज" बन चुका है, जहाँ वाणी के विभिन्न रूप–मौखिक, लिखित, डिजिटल के माध्यम से विचारों, सूचनाओं और भावनाओं का असीमित आदान–प्रदान हो रहा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, समाचार माध्यम और वैश्विक मंचों पर व्यक्ति की वाणी न केवल उसकी पहचान बन चुकी है, बल्कि उसकी सोच, दृष्टिकोण और प्रभाव का भी माध्यम बन गई है। इस परिप्रेक्ष्य में उपनिषदों का वाक्–तत्त्व हमें यह सिखाता है कि वाणी का उपयोग विवेकपूर्वक, सत्यनिष्ठा से और कल्याणकारी दृष्टिकोण से होना चाहिए।[1]

मुख्य शब्द : वाक्–तत्त्व, उपनिषद, ब्रह्म, आत्मा, सत्य (सत्यम्), नैतिकता, संवाद, आध्यात्मिक जागरूकता, शिक्षा एवं वाक्–शिक्षा, गुरु–शिष्य परम्परा, डिजिटल युग और वाणी, आत्मबोध।

वाणी और नैतिकता का संबंध उपनिषदों में कहा गया है – "सत्यं वद, धर्मं चर" अर्थात सत्य बोलो और धर्म का पालन करो। यह निर्देश केवल धार्मिक या आध्यात्मिक संदर्भों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आधुनिक जीवन की नैतिक नींव भी है। आज के समय में जहाँ झूठ, छल और प्रलोभन के सहारे प्रचार और संवाद संचालित हो रहे हैं, वहाँ वाक् की शुद्धता और सत्यता की आवश्यकता और अधिक हो जाती है। स्कूलों, कॉलेजों, राजनैतिक मंचों, मीडिया तथा न्याय व्यवस्था में यदि वाणी का प्रयोग ईमानदारी और संयम से किया जाए, तो सामाजिक विश्वास, न्याय और सामूहिक चेतना को सुदृढ़ किया जा सकता है। वाणी और लोकतंत्र की आत्मा संवाद है।[2] संसद, विधानसभा, जनसभाएँ और जनमंच – ये सभी संवाद के माध्यम हैं। जब वाणी मर्यादित और तथ्यपूर्ण होती है, तो वह जनमत निर्माण और राष्ट्रीय विकास में सहायक बनती है। लेकिन जब वही वाणी अपशब्द, झूठे आरोप और उत्तेजना का रूप ले लेती है, तो समाज में द्वेष, विघटन और वैमनस्य उत्पन्न होता है। उपनिषदों का

[1] शर्मा, अरविंद, *वेदिक साहित्य में वाक् की अवधारणा*, मोतीलाल बनारसीदास, पृ. 54
[2] बृहदारण्यक उपनिषद 4.1.2

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

वाक्–तत्त्व हमें यह मार्गदर्शन देता है कि वाणी केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली सामाजिक माध्यम है जो निर्माण और विनाश दोनों कर सकता है। शिक्षा और वाक शिक्षा केवल सूचना का संप्रेषण नहीं है, बल्कि यह एक मूल्यपरक संवाद है। शिक्षक की वाणी यदि प्रेरणादायक, नैतिक और ज्ञानयुक्त हो, तो वह छात्रों में बौद्धिक ही नहीं बल्कि चारित्रिक विकास भी करती है। इसीलिए गुरु और शिष्य के बीच संवाद को उपनिषदों ने ब्रह्मविद्या का आधार माना है – "आचार्य उपनिषद् ब्रह्म।" आज की शिक्षा प्रणाली में यदि वाणी का प्रयोग केवल पाठ्य सामग्री को पढ़ाने तक सीमित रहेगा, तो समग्र विकास नहीं हो पाएगा। शिक्षकों को चाहिए कि वे अपनी वाणी को ज्ञान, विवेक और प्रेम से युक्त करें जिससे विद्यार्थी जीवनमूल्यों को आत्मसात कर सकें।[3]

सामाजिक संबंधों में वाक्–तत्त्व पारिवारिक और सामाजिक जीवन में वाणी का व्यवहार अत्यंत संवेदनशील क्षेत्र है।[4] एक कठोर शब्द रिश्तों को तोड़ सकता है, जबकि एक मधुर शब्द जीवनभर के लिए संबंध जोड़ सकता है। आज के तनावपूर्ण जीवन में मानसिक स्वास्थ्य का एक बड़ा कारण आपसी संवादहीनता या असंवेदनशील संवाद है। उपनिषदों का वाक्–तत्त्व हमें सिखाता है कि वाणी को हितं, प्रियं, सत्यं होना चाहिए–जो न केवल सत्य हो, बल्कि प्रिय और कल्याणकारी भी हो।[5]

डिजिटल युग और वाणी की मर्यादा सोशल मीडिया के युग में व्यक्ति की वाणी वैश्विक हो गई है। हर शब्द, हर पोस्ट, हर ट्वीट किसी को प्रेरणा दे सकता है या आहत भी कर सकता है। इस युग में वाक्–तत्त्व की प्रासंगिकता इसलिए और भी बढ़ जाती है क्योंकि असत्य, अभद्रता और घृणा तेजी से फैलती है। ऐसे में यदि व्यक्ति उपनिषदों से प्रेरणा लेकर वाणी को संयमित और विवेकपूर्ण रखे, तो डिजिटल संवाद को भी संस्कारमय बनाया जा सकता है। इस प्रकार, उपनिषदों में वर्णित वाक्–तत्त्व न केवल दर्शन की दृष्टि से, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह आधुनिक समाज को सत्य, विवेक और नैतिकता की ओर अग्रसर करने वाली एक जीवनदृष्टि प्रदान करता है। जब व्यक्ति, समाज और राष्ट्र वाणी की शक्ति को आत्मिक दृष्टि से समझेंगे, तभी वास्तविक विकास और समरसता का मार्ग प्रशस्त होगा।

"अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां
चिकित्वती परुषे यज्ञियानाम।
तं मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा,
भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम।।"[6]

---

[3] कपूर, अनुराधा, एक्टर्स, पिलग्रिम्स, *किंग्स एंड गॉड्स द रामलीला एट रामनगर*, सीगल बुक्स, 1993 पृ. 28

[4] ड्यूसेन, पॉल, *द फिलॉसफी ऑफ द उपनिषद्स*, डोवर पब्लिकेशन्स, 2010 पृ. 84

[6] अथर्ववेद – काण्ड 6, सूक्त 120, मंत्र 3

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

मैं वाणी हूँ, जो समस्त देवताओं के लिए यज्ञ में प्रयोग की जाती है, सभी ज्ञानों को जानने वाली, अनेक स्थानों में व्याप्त और लोकों को व्याप्त करने वाली हूँ। यह श्लोक वाक् की दिव्यता और उसके व्यापक प्रभाव को दर्शाता है, जो आधुनिक समाज में भी सत्य, ज्ञान और शक्ति का प्रतीक बनकर उभरती है।

आध्यात्मिक जागरूकता का विकास

वाक्–तत्त्व का एक गहन आयाम आध्यात्मिक जागरूकता से जुड़ा है। उपनिषदों के अनुसार, वाणी न केवल भौतिक संप्रेषण का माध्यम है, बल्कि वह ब्रह्म की अभिव्यक्ति का भी माध्यम है। वाक् के माध्यम से व्यक्ति आत्मज्ञान, सत्यबोध और ब्रह्म साक्षात्कार की दिशा में अग्रसर हो सकता है। उपनिषदों में कहा गया है – "वाचो हि सर्वं प्रविभज्य जानाति"[7] अर्थात वाणी के माध्यम से ही समस्त ज्ञान को विभक्त कर जाना जा सकता है। यह कथन दर्शाता है कि वाणी, जब ध्यान, संयम और विवेक के साथ प्रयोग की जाती है, तो वह व्यक्ति को आत्मा और ब्रह्म के परम सत्य की ओर ले जाती है। आधुनिक जीवन में जब व्यक्ति भौतिकतावाद, उपभोक्तावाद और बाह्य प्रदर्शन की दौड़ में उलझा हुआ है, तब वाक्–तत्त्व की आध्यात्मिक भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। आज की शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक संवाद और व्यक्तिगत संबंधों में यदि वाणी का प्रयोग सत्य, शांति और आत्म–निरीक्षण को प्रोत्साहित करने वाले रूप में हो, तो यह लोगों में आंतरिक चेतना और आध्यात्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। उपनिषदों के अनुसार, श्रवण, मनन और निदि, यासन–इन तीनों चरणों में वाणी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। श्रवण के बिना ज्ञान संभव नहीं और बिना वाणी के श्रवण नहीं हो सकता। वाणी की शुद्धता, मर्यादा और सत्यता व्यक्ति के भीतर आत्म–जागरण उत्पन्न करती है। जब मनुष्य संयमित और ध्यानयुक्त वाणी का प्रयोग करता है, तो वह धीरे–धीरे आत्म–चिंतन और आत्म–साक्षात्कार की ओर उन्मुख होता है। यही प्रक्रिया उसे बाह्य आकर्षणों से ऊपर उठाकर आत्मा के स्वरूप को पहचानने की ओर ले जाती है। वाक् का यह रूप केवल धार्मिक साधना तक सीमित नहीं है, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र–कार्यस्थल, परिवार, समाज और राष्ट्र–में भी एक संतुलित, विवेकपूर्ण और चेतनात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है।[8]

इस प्रकार, उपनिषदों में वर्णित वाक्–तत्त्व न केवल मानसिक और नैतिक विकास का उपकरण है, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर छिपी हुई आध्यात्मिक शक्ति को जाग्रत करने का सशक्त माध्यम भी है। आधुनिक समाज में जब आध्यात्मिक मूल्य गौण होते जा रहे हैं, तब वाक्–तत्त्व द्वारा प्रेरित जागरूकता व्यक्ति और समाज दोनों के लिए आत्मपरिष्कार का माध्यम बन सकती है।

''वाङ्मनसि प्रतिष्ठिता,

---

[7] कपूर, अनुराधा, एक्टर्स, पिलग्रिम्स, *किंग्स एंड गॉड्स द रामलीला एट रामनगर*, सीगल बुक्स, 1993 पृ. 35

[8] शर्मा, अरविंद, *वेदिक साहित्य में वाक् की अवधारणा*, मोतीलाल बनारसीदास, 1981

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

मनो मे वाचि प्रतिष्ठितम।
आविराविर्म एधि। वेदस्य मा अणीस्थः।
श्रुतं मे मा प्रहासी।।"[9]

मेरी वाणी मन में स्थित हो और मेरा मन वाणी में प्रतिष्ठित हो। तू (ज्ञान) मेरे भीतर प्रकाशित हो। मैं वेद को ग्रहण कर सकूँ, जो कुछ मैंने सुना है वह मुझसे न छूटे। यह श्लोक स्पष्ट करता है कि जब वाणी और मन का पूर्ण समन्वय होता है, तभी सच्चे ज्ञान और आत्मिक चेतना का विकास संभव है। यही आध्यात्मिक जागरूकता की आधारशिला है।[10]

जीवन के उद्देश्य की खोज में मार्गदर्शन

वाक्–तत्त्व न केवल संप्रेषण का माध्यम है, बल्कि यह जीवन के गूढ़ उद्देश्यों की ओर मनुष्य का मार्गदर्शन करने वाला दिव्य तत्त्व है। उपनिषदों में वाक् को ब्रह्म की अभिव्यक्ति माना गया है और यह स्पष्ट किया गया है कि वाणी के माध्यम से न केवल ज्ञान का आदान–प्रदान होता है, बल्कि आत्मा का साक्षात्कार भी संभव होता है। आज के आधुनिक समाज में, जहाँ भौतिक सफलता को ही जीवन का अंतिम लक्ष्य मान लिया गया है, वहाँ उपनिषदों का वाक्–तत्त्व व्यक्ति को आत्म–चिंतन और जीवन के परम उद्देश्य की खोज की दिशा में प्रेरित करता है। वर्तमान समय में अधिकांश व्यक्ति व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा, सामाजिक अपेक्षाओं और उपभोक्तावादी जीवनशैली में उलझे हुए हैं। इस उथलेपन और बाह्य प्रलोभनों के बीच व्यक्ति अपने जीवन के वास्तविक अर्थ और उद्देश्य से भटक जाता है। ऐसे में उपनिषदों का यह संदेश कि "वाणी ब्रह्म की ओर ले जाने वाली साधना है"–व्यक्ति को अपने भीतर झाँकने, मौन की महत्ता को समझने और आत्म–शोधन के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। जब व्यक्ति सत्य और संयमित वाणी का अभ्यास करता है, तो उसका ध्यान आत्मा की ओर उन्मुख होता है, जिससे वह जीवन के असली लक्ष्य मुक्ति, ज्ञान और आत्मिक संतुलन की ओर अग्रसर होता है।[11]

वाक्–तत्त्व के माध्यम से गुरुओं द्वारा शिष्यों को जो उपदेश दिए गए, वे ही जीवन का मार्गदर्शन बने। श्रवण, मनन और निदिध्यासन – ये तीनों ज्ञान की सीढ़ियाँ हैं और इनका मूल आधार वाणी है। जब कोई शिष्य गुरु की वाणी को श्रद्धा और एकाग्रता से सुनता है, तब उसके भीतर आत्मिक चिंतन की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। यह मार्गदर्शन केवल धार्मिक क्षेत्र में नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और दार्शनिक क्षेत्रों में भी व्यक्ति को उसकी भूमिका और उद्देश्य से परिचित कराता है आज के दौर में, जब युवा वर्ग अपने जीवन की दिशा को लेकर भ्रमित है, करियर और सफलता की दौड़ में मानसिक और भावनात्मक असंतुलन से ग्रस्त है, तब उपनिषदिक वाक्–तत्त्व उन्हें एक स्थायी, गहन और आत्मिक दृष्टि प्रदान कर सकता है। यह उन्हें यह सोचने के लिए प्रेरित करता है कि "मैं कौन हूँ?", "मैं क्यों हूँ?" और

---

[9] अथर्ववेद, काण्ड 4, सूक्त 30, मंत्र 3
[10] मॅक्लूहन, मार्शल, *अंडरस्टैंडिंग मीडिया द एक्सटेंशंस ऑफ मैन एमआईटी प्रेस,* 1994
[11] राधाकृष्णन, सर्वपल्ली, *द प्रिंसिपल उपनिषद्स,* हार्पर कॉलिन्स, 1994 पृ. 36

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

"मेरे जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है?" – और यही प्रश्न व्यक्ति को आत्मबोध की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार वाक्–तत्त्व केवल संवाद का उपकरण न होकर जीवन की दिशा और दर्शन को प्रकट करने वाला आलोकस्तंभ है। जब व्यक्ति सत्य, हित और आवश्यक मौन का मूल्य समझते हुए वाणी का प्रयोग करता है, तब वही वाणी उसे जीवन की गहराइयों तक ले जाकर उसके अस्तित्व का अर्थ स्पष्ट कर देती है। यही उपनिषदों का मौलिक मार्गदर्शन है – जो आज भी उतना ही आवश्यक और उपयोगी है।[12]

''आत्मा वा अरे दृष्टव्यः
श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।''[13]

हे प्रिय, आत्मा को देखा जाना चाहिए, उसकी सुनवाई करनी चाहिए, उस पर मनन करना चाहिए और उस पर ध्यानपूर्वक चिंतन (निदिध्यासन) करना चाहिए। यह श्लोक दर्शाता है कि आत्मा – जो जीवन का वास्तविक उद्देश्य है – उसकी प्राप्ति का मार्ग श्रवण (सुनना), मनन (सोचना) और निदिध्यासन (ध्यानपूर्वक चिंतन) है, जिनका मूल आधार वाणी (वाक्) है। उपनिषदों का यह निर्देश व्यक्ति को आत्म–ज्ञान की ओर प्रेरित करता है और जीवन के सच्चे उद्देश्य को पहचानने की प्रक्रिया का बोध कराता है।

आत्म–बोध को जीवन का परम लक्ष्य घोषित करना: उपनिषदों के अनुसार, मनुष्य का जीवन तभी सार्थक होता है जब वह अपने 'स्वरूप' को पहचानता है। ''आत्मा वा अरे दृष्टव्यः, श्रोतव्यः, मन्तव्यः, निदिध्यासितव्यः'' (बृहदारण्यक उपनिषद्) – यह वाक्य स्पष्ट करता है कि आत्मा का साक्षात्कार ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।

माया और अज्ञान से मुक्ति का मार्ग: उपनिषद यह मानते हैं कि अज्ञान (अविद्या) के कारण ही मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को भूल बैठता है और माया के जाल में फँस जाता है। जीवन के उद्देश्य की प्राप्ति हेतु वह शिक्षा आवश्यक है जो 'विद्या' के माध्यम से इस अंधकार को दूर कर सके।

महावाक्यों द्वारा दिशादर्शन: महावाक्य जैसे "तत्त्वमसि" (तू वही है), "अहं ब्रह्मास्मि" (मैं ब्रह्म हूँ) और "प्रज्ञानं ब्रह्म" (ब्रह्म ज्ञान स्वरूप है) साधक को यह बोध कराते हैं कि जीवन की सच्ची पूर्णता आत्मा और ब्रह्म की एकता में है।

शिष्य और गुरु का संवाद: छांदोग्य और कठ उपनिषदों में यह मार्गदर्शन गुरु–शिष्य संवाद के रूप में प्रकट होता है। यम–नचिकेता संवाद में यमराज नचिकेता को बताते हैं कि जो स्थायी है, जो परमानंद है, वही जीवन का अंतिम लक्ष्य है–अनित्य वस्तुओं की प्राप्ति नहीं।[14]

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता: आज के युग में जहाँ भौतिक सुखों की प्राप्ति को ही लक्ष्य मान लिया गया है, वहाँ उपनिषदों की यह शिक्षाएँ मनुष्य को आत्ममूल्यांकन की ओर मोड़ती हैं। वे दिखाती हैं कि बाहरी उपलब्धियाँ अंततः क्षणिक हैं, जबकि आंतरिक शांति, सत्य का

---

[12] शर्मा, अरविंद, *वैदिक साहित्य में वाक् की अवधारणा,* दिल्ली मोतीलाल बनारसीदास, 1981 पृ. 90
[13] माण्डूक्य उपनिषद्, श्लोक 7, अथर्ववेद
[14] शर्मा, अरविंद, *वैदिक साहित्य में वाक् की अवधारणा,* मोतीलाल बनारसीदास, 1981 पृ. 32

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 30489458

ज्ञान और आत्मिक विकास ही जीवन का सच्चा उद्देश्य है। उपनिषदों का मार्गदर्शन हमें आत्मा के ज्ञान और ब्रह्म से एकत्व की ओर ले जाता है। जीवन का उद्देश्य केवल कर्म करना नहीं, बल्कि उस चेतना की खोज करना है जो हमारे भीतर विद्यमान है। यह मार्गदर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वैदिक युग में था।[15]

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उपनिषदों में वाक्–तत्त्व को केवल भाषिक अभिव्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि ब्रह्म की सजीव शक्ति, आत्मा की सक्रियता और चेतना के मूल माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। वाणी मनुष्य को केवल विचारों और सूचनाओं के आदान–प्रदान तक सीमित नहीं करती, बल्कि उसे सत्य, विवेक और आत्मबोध की दिशा में अग्रसर करने वाली आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करती है। उपनिषदों का यह दृष्टिकोण बताता है कि वाणी तभी सार्थक होती है जब वह सत्य, हित और कल्याण से युक्त हो। असंयमित, असत्य या हिंसक वाणी न केवल व्यक्ति के नैतिक पतन का कारण बनती है, बल्कि समाज में विघटन, अविश्वास और वैमनस्य को भी जन्म देती है। इसके विपरीत, संयमित, सत्यनिष्ठ और करुणामयी वाणी सामाजिक सौहार्द, लोकतांत्रिक संवाद और राष्ट्रीय विकास का सशक्त आधार बनती है।

शिक्षा के क्षेत्र में उपनिषदिक वाक्–तत्त्व गुरु–शिष्य संवाद को ज्ञान का मूल आधार मानता है। श्रवण, मनन और निदिध्यासन की प्रक्रिया के माध्यम से वाणी न केवल बौद्धिक ज्ञान देती है, बल्कि चरित्र–निर्माण और आध्यात्मिक उन्नयन का मार्ग भी प्रशस्त करती है। आधुनिक शिक्षा–प्रणाली में यदि वाणी को केवल पाठ्य–सामग्री तक सीमित रखा गया, तो समग्र व्यक्तित्व–विकास संभव नहीं हो सकेगा। डिजिटल युग में, जहाँ वाणी का प्रभाव वैश्विक और तात्कालिक हो गया है, वहाँ उपनिषदिक वाक्–तत्त्व की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। सोशल मीडिया और डिजिटल संवाद के माध्यम से प्रसारित प्रत्येक शब्द सामाजिक चेतना को प्रभावित करता है। ऐसे समय में उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित वाणी की मर्यादा, सत्यता और नैतिकता आधुनिक समाज के लिए दिशासूचक सिद्ध हो सकती है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वाक्–तत्त्व उपनिषदों में केवल दर्शन का विषय नहीं, बल्कि जीवन–दर्शन का मूल आधार है। यह मनुष्य को आत्मज्ञान, आध्यात्मिक संतुलन और जीवन के वास्तविक उद्देश्य की खोज की ओर प्रेरित करता है। आज के भौतिकतावादी और तनावपूर्ण समाज में उपनिषदिक वाक्–तत्त्व व्यक्ति, समाज और राष्ट्र–तीनों के लिए नैतिक, आध्यात्मिक और मानवीय निर्माण का प्रभावशाली साधन सिद्ध हो सकता है।

[15] माण्डूक्य उपनिषद्, श्लोक 7, अथर्ववेद